ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

स नो रास्व सुवीर्यम्।। अथर्व0 20/108/3

हे शक्तिदाता प्रभो! आप हमें वीरता प्रदान करें।
O ! the Bostower of power Lord ! Bestow valour on us.

वर्ष 38, अंक 5 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 8 दिसम्बर, 2014 से रविवार 14 दिसम्बर, 2014
विक्रमी सम्वत् 2071 सृष्टि सम्वत् 1960853115
दयानन्दाब्द : 191 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के तत्त्वावधान में आर्यसमाज बैंकॉक के सहयोग से

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन –बैंकॉक (थाईलैंड) 2014 सम्पन्न

94 वर्ष पश्चात् मातृभूमि भारत से इतनी संख्या में आर्यजों का पधारना थाईलैंड में आर्यसमाज के भविष्य को मजबूती प्रदान करेगा – एस. पी. सिंह

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों की पुन: प्रारंभ की गई श्रृंखला में 1 व 2 नवम्बर को सिंगापुर तथा 8-9 नवम्बर 2014 को थाईलैण्ड में यह सम्मेलन आयोजित किए गए।

'94 वर्ष पश्चात् मातृभूमि भारत से इतनी संख्या में आर्यजों का पधारना थाईलैंड में आर्यसमाज के भविष्य को मजबूती प्रदान करेगा।' – ये उद्गार आर्यसमाज बैंकॉक के प्रधान श्री एस. पी. सिंह जी ने सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में व्यक्त किए।

दोनों देश पास-पास होने से यह निर्णय लिया गया। कार्यक्रम का आयोजन बैंकॉक स्थित आर्य समाज परिसर में किया गया था। यहां आर्य समाज की स्थापना 94 वर्ष पूर्व सन् 1930 में की गई थी। वर्तमान में एक विशाल भवन, यज्ञशाला, अतिथि गृह और सत्संग हॉल एवं सामने खुला मैदान है। – शेष पृष्ठ 5 पर

आर्यसमाज बैंकॉक के अधिकारियों एवं सम्मेलन में पहुंचे संन्यासीवृन्दों के साथ के साथ सार्वदेशिक सभा, दिल्ली सभा एवं अन्य सभाओं के प्रतिनिधिगण।

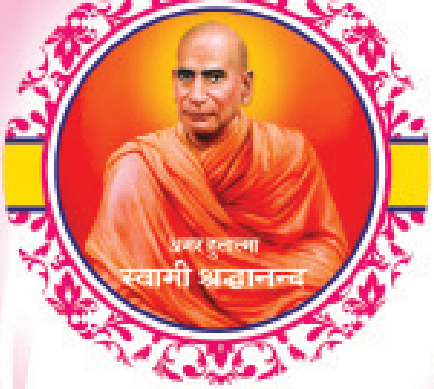

88वाँ स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

शोभायात्रा

रविवार 25 दिसम्बर, 2014

यज्ञ प्रात: 8.00 से 9.30 बजे तक

स्थान :- स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन, नया बाजार, दिल्ली

विशाल शोभा यात्रा का प्रारम्भ प्रात: 10 बजे

विशाल सार्वजनिक सभा

समय : दोपहर 1.00 से 4.00 बजे तक

स्थान : रामलीला मैदान, अजमेरी गेट, नई दिल्ली -2

शनिवार प्रात: 10 से 1 बजे
आस्था चैनल पर प्रसारण

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस पर हजारों की संख्या में पहुंचकर संगठन का परिचय दें।
नोट : ऋषि लंगर की व्यवस्था सभा की ओर से रहेगी ।

निवेदक :- आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य), 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

वेद-स्वाध्याय

नेता

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

भुवो यज्ञस्य रजसश्च नेता यत्रा नियुद्भिः सचसे शिवाभिः।
दिवि मूर्धानं दधिषे स्वर्षां जिह्वामग्ने चकृषे हव्यवाहम्।।
यजुर्वेद : अध्याय १५ मन्त्र २३

अर्थ—तू (**यज्ञस्य**) यज्ञ का (**च**) और (**रजसः**) संसार [लोका रजांसि उच्यन्ते] का (**नेता**) नेता (**भुवः**) होगा (**यत्र**) जब तू (**शिवाभिः**) कल्याणमयी (**नियुद्भिः**) नीतियों से (**सचसे**) युक्त होगा। (**मूर्धानम्**) सिर को (**दिवि**) प्रकाश में (**दधिषे**) धारण करेगा [बुद्धि ज्ञान से प्रकाशित रहेगी] (**स्वर्षाम्**) उत्तम-गति वाली, मधुर (**जिह्वाम्**) जिह्वा को (**हव्यवाहम्**) भोग कराने वाली (**चकृषे**) करेगा।

'णीञ् प्रापणे' धातु से नेता की व्युत्पत्ति हुई है। जो लोगों या संगठन को किसी प्रापणीय स्थान या लक्ष्य पर पहुँचाये उसे नेता कहते हैं। लोग मिलकर जनहित के जिस कार्य में कटिबद्ध हो जायें उस कार्य को यज्ञिय कार्य कहा जाता है। उस समय किसी योग्य नेता की तलाश की जाती है जो निःस्वार्थ भाव से कार्य को आगे बढाये और नीति का भी जानने वाला हो तथा माला के मणकों में सूत्र की भाँति सबको संगठन में बाँधकर रख सके। जिस संगठन का नेता जितना प्रबुद्ध, नीतिज्ञ और कार्यकुशल होगा उसे उतनी ही सफलता मिलेगी। कुछ लोगों में ये गुण जन्मजात ही होते हैं और लोग उसे अनायास ही अपना नेता चुन लेते हैं। कुछ लोग नेतृत्व के गुणों का विकास कर धीरे-धीरे आगे बढ़ते हैं। इन दोनों की यदि तुलना की जाये तो जो अपने परिश्रम से आगे बढ़ा है, वही नेतृत्व सम्भालने योग्य है क्योंकि जीवन के हर क्षेत्र के ऊँच-नीच का उसे अनुभव है तथा अपने पुरुषार्थ से उसने इन गुणों का विकास किया है।

संगठन को गति देने में नेता का वही स्थान है जैसे रेलगाड़ी को खींचने में इञ्जिन का होता है। नेता की कथनी और करनी एक जैसी हो। उसे अपने पद की गरिमा का निरन्तर ध्यान रखना चाहिये। पद-प्राप्ति व्यक्ति को आलसी, प्रमादी, विलासी और कर्त्तव्य-विमुख बना देती है। चाटुकार लोग नेता के चारों और घेराबन्दी कर लेते हैं। वे संगठन एवं नेता का हित चाहने वाले लोगों को पास भी नहीं आने देते। नेता भी लोगों से प्रशंसा और 'हाँ-हाँ' सुनने का अभ्यस्त हो जाता है। सच्चा और हितकर परामर्श देने वाले उसे बुरे लगते हैं और वह उनसे किसी बहाने छुटकारा पाने की योजना बनाता है अथवा उनकी उपेक्षा करता है। परिणामस्वरूप कर्मठ कार्यकर्त्ता धीरे-धीरे दूर होने लगते हैं। नेता इस बात को भुला देता है कि जिस सीढ़ी के सहारे वह इस मूर्धन्य पद पर आरूढ़ हुआ है, उसी को धराशायी कर देने पर एक दिन वह भी चारों खाने चित्त गिरेगा। वेद उसे सावधान और सुपथ दिखलाते हुये कहता है—

भुवो यज्ञस्य रजसस्य नेता तू परोपकार या यज्ञीय भावना से बने संगठन या लोगों का नेता और मार्गदर्शक तभी बना रह सकेगा जब **शिवाभिः नियुद्भिः सचसे** स्वार्थ को छोड़ कल्याणकारी नीतियों पर चलेगा। जिस संगठन ने तुझे जो उत्तरदायित्व दिया है उसका वहन करना तेरा प्रथम कर्त्तव्य है। तेरा तप-त्याग, जनहित की भावना, पुरुषार्थ और स्वार्थरहित जीवन ही लोगों को तुझसे जोड़े रखेगा। जैसे अपने वेगादि गुणों से वायु इस पृथिवी को धारण किये रहता है इसे विखण्डित नहीं होने देता। इसी भाँति सक्रिय नेता किसी न किसी कार्यक्रम के साथ कार्यकर्त्ताओं को जोड़े रखता है। राजा या नेता के चार मित्र होते हैं—

चतुर्विधानि मित्राणि राज्ञां राजन् भवन्त्युत। सहार्थो भजमानश्च सहजः कृत्रिमस्तथा। धर्मात्मा पञ्चमश्चापि मित्रं नैकस्य न द्वयोः। यतो धर्मस्ततो वा स्याद् धर्मस्थो वा ततो भवेत्॥

महा०शा० अ० ८०.४.५ ॥

१. सहार्थ—सहार्थ मित्र वे होते हैं जो किसी शर्त पर एक दूसरे की सहायता के लिए मित्रता करते हैं। जैसे अमुक कार्य पूरा होने पर लाभांश को हम परस्पर बांट लेंगे।

२. भजमान—जिनके साथ पुराने पारिवारिक सम्बन्ध से मित्रता हो वे 'भजमान' कहलाते हैं।

३. सहज—जन्म से ही साथ रहने या घनिष्ठ सम्बन्ध होने के कारण जिसमें परस्पर स्वाभाविक मित्रता हो जाती है वे 'सहज मित्र' कहे गये है।

४. धन आदि का प्रलोभन देकर अपनाये हुये 'कृत्रिम मित्र' कहलाते हैं।

५. इनके अतिरिक्त पाँचवा मित्र धर्मात्मा पुरुष होता है। वह किसी का पक्षपाती नहीं होता और न दोनों पक्षों को धन देकर कपटपूर्वक दोनों का मित्र बनने का दिखावा करता है। जिस पक्ष में धर्म होता है, उसी ओर वह भी हो जाता है। इनमें धर्मात्मा प्रथम श्रेणी में, सहज, भजमान द्वितीय कोटि तथा सहार्थ और कृत्रिम निम्न जानने चाहियें।

नेता को इन सबके गुणों को जान उनसे यथायोग्य सहयोग लेना चाहिये। कई बार बुरा व्यक्ति भी भला और भला मनुष्य बुरा बन जाता है। क्योंकि मनुष्य का चित्त सदैव एक जैसा नहीं रहता है। इसलिये जो प्रधान कार्य हो उसे अपने सामने ही नेता को पूरा करा लेना चाहिये। नीतिशास्त्रकारों का कहना है कि किसी पर भी किया हुआ अत्यन्त विश्वास धर्म और अर्थ दोनों का नाश करने वाला होता है और सर्वत्र अविश्वास करना भी मृत्यु से बढ़कर है।

दिवि मूर्धानं दधिषे—इसलिये नेता परिमार्जित बुद्धि वाला होना चाहिये जो समयानुकूल कदम उठा सके और शत्रु मित्र को पहचान कर सके। उत्तम मित्र की पहचान यही है कि वह अपने नेता की उत्तरोत्तर उन्नति की ही चाहना करता है।

नेता को सदैव न्याय और धर्म का ही पक्ष लेना चाहिये। कई बार नेता के सामने संकट उस समय उपस्थित हो जाता है जब संगठन में फूट पड़ जाये और आपस में दो गुटों में कार्यकर्त्ता विभक्त हो जायें। उस समय **शक्त्यान्नदानं सततं तितिक्षार्जव मार्दवम्। यथार्हप्रतिपूजा च शस्त्रमे तदनायसम्॥**

अपनी सामर्थ्य के अनुसार अन्न दान, सहनशीलता, सरलता, कोमलता तथा यथायोग्य सत्कार रूप यह बिना लोहे का बना शस्त्र है। अर्थात् ये बातें दूसरे व्यक्ति को तुरन्त प्रभावित करती हैं।

ज्ञातीनां वक्तुकामानां कटुकानि लघूनि च। गिरा त्वं हृदयं वाचं शमयस्व मनांसि च॥ महा०शा०अ० ८१.२१-२२

संगठन के लोगों द्वारा कड़वी तथा ओछी बात कहने पर नेता मधुर वचन बोलकर उनके हृदय, मन और वाणी को शान्त कर दे। नेता को शिव शंकर की भाँति संगठन के हित में इस विष का पान करना ही होगा।

जिह्वामग्ने चकृषे हव्यवाहम्—नेता केवल खाली बातों का ही आश्वासन न दे। मैं यह कर दूँगा, मैंने यह किया है और मेरा इस कार्य को करने का निश्चय है, इत्यादि थोथी घोषणा को सुनकर कार्यकर्त्ता और लोग निराश हो जाते हैं। जितना वह कर सकने का सामर्थ्य रखता है उतना कार्य करके दिखायेगा तो लोग उस पर विश्वास करने लगेंगे। वह मधुर और अल्पभाषी होवे। अधिक बोलने वाले को लोग डपोरशंख मान लेते हैं।

मन्त्र का देवता अग्नि है। **अग्निरग्रणी भवति** अग्नि सदैव आगे रहता है। **न क्नोपयति न स्नेहयति** वह किसी विषय में लिप्त नहीं होता नेता में भी यही गुण होने पर लोग उसे सिर-माथे पर बिठा लेते हैं। - *क्रमशः*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तुलनात्मक प्रगति रिपोर्ट

मद का नाम	2003	2006	2010	2014
सभा कर्मचारी	3	6	10	22
मासिक वेतन	8175	15700	107000	347000
कार्य घंटे	8	8	8	10
बैलेंस सीट	2678197	6941355	10106581	19997081
स्थिर निधियां	1124997	1381002	1783771	8025808
कम्प्यूटर सैट (लैपटॉप सहित)	टाइपराईटर	3	6	19
प्रिन्टर	–	3	5	8
फोटोस्टेट मशीन	–	–	0	3
स्कैनर	–	1	4	6
फैक्स	–	1	3	3
वाहन	1	2	4	7
टेलिफोन/मोबाईल	1	4	10	15
इंटरनेट कनैक्शन	0	1	1	4
कार्यालय (एरिया sqft.)	200	800	1000	2000
नई सम्पत्तियां क्रय/दान	–	–	3	2
उपसमितियों की बैठकें	–	15	21	25
आर्यसन्देश प्रसार संख्या	1500	4000	4000	4000
इंटरनेट द्वारा प्रेषित आर्यसन्देश	0	0	500	30000
हॉस्पीटल (कार्य परिसर sqft.)	1000	7000	12000	12000
चिकित्सालय कर्मचारी	5	10	14	10
चिकित्सालय सुविधाएं (2003)	साधारण ओपीडी			
सुविधाएं (2006)	ओपीडी, एक्सरे, ईसीजी, लैबोरेटरी, एम्बूलेंस सेवा।			
सुविधाएं (2010)	ओपीडी, एक्सरे, ईसीजी, लैबोरेटरी, एम्बूलेंस सेवा, ओ.टी., फिजियो, होम्यो, डैंटल, आईकेयर, जच्चा-बच्चा, आर्थोपैडिक			
सुविधाएं (2014)	ओपीडी, एक्सरे, ईसीजी, लैबोरेटरी, एम्बूलेंस सेवा, ओ.टी., फिजियो, होम्यो, डैंटल, आईकेयर, जच्चा-बच्चा, आर्थोपैडिक			

44वें बलिदान दिवस पर विशेष

कल्याण मार्ग के पथिक : स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज

कल्याण मार्ग का पथिक यह नाम मानस पटल पर आते ही आर्य जगत में एक महान क्रान्तदर्शी, निर्भीक, संन्यासी, राष्ट्रभक्त, ऋषिभक्त, कर्मयोगी और एक बलिदानी के व्यक्तित्व की चित्रावली प्रस्तुत हो जाती है। मन में एक क्रान्ति की आभा परिलक्षित होने लगती है। जिन्हे आर्य समाज के इतिहास में श्रद्धा और सम्मान से अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती के नाम से जाना जाता है जो स्वतन्त्रता के महा संग्राम में एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में स्थित थे। आर्य समाज के आन्दोलन में स्वामी श्रद्धानन्द का नाम और कार्य महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व और कृतित्व के ठीक नीचे ही सुशोभित होता है। उन्होंने धर्म, समाज, राष्ट्र तथा शिक्षा के चतुर्दिक् प्रस्तुत क्षेत्रों में अपने मौलिक चिन्तन तथा प्रबल कर्मठ शक्ति से नवीन क्रांति का सूत्रपात किया। आर्यसमाज के धर्मप्रचार कार्यक्रम को उन्होंने नूतन आयाम दिया तो शुद्धि, संगठन तथा वर्णाश्रमधर्म वास्तविक अनुपालन पर जोर देकर उन्होंने भारतीय समाज में नवचेतना उत्पन्न भी की। देश के प्रति कर्त्तव्यपालन के भाव ने उन्हें कांग्रेस आन्दोलन में सम्मिलित होने की प्रेरणा दी किन्तु वे अपने युग के अन्य नेताओं की भाँति केवल व्याख्यान-मंच से दहाड़नेवाले वाक्शूर की ही भाँति मुखर नहीं हुए अपितु अवसर आने पर उन्होंने एक निर्भीक संन्यासी के बाने की रक्षा करते हुए आक्रामक संगीनों के समक्ष अपनी छाती खोलने का साहस भी दिखाया। भारतीय शिक्षा को पुरातन गुरुकुलीय के अनुरूप ढालने का उनका प्रयास तो सर्वथा अनूठा ही था।

'कल्याण मार्ग का पथिक' की विवेचना देते हुए महान साहित्य कार एवं पुरातत्ववेत्ता डॉ. भवानी लाल भारतीय ने कहा कि "श्रद्धानन्द ने अपनी आत्मकथा को 'कल्याण मार्ग का पथिक' नाम प्रदान कर अपने प्रारम्भिक जीवन की कटु यथार्थता तथा उसके मंगलोन्मुख होने की ही कहानी को प्रस्तुत किया है। स्वामी श्रद्धानन्द जहाँ कर्मक्षेत्र के अद्वितीय योद्धा थे, वहाँ वे एक सफल लेखक तथा साहित्यकार भी थे। कर्मठता तथा बौद्धिकता का ऐसा समन्वय प्राय: बहुत कम लोगों में दिखाई देता है।"

तो आइए उस महान व्यक्तित्व के जीवन दर्शन का कुछ तो स्मरण करें। क्योंकि आगे आने वाला वह महान् पर्व उनके बलिदान की याद दिलाता रहेगा जिसको उन्होंने अपने रक्त कणों से पल्लवित किया है। वे ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने **"असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय"** उपनिषद् के रहस्य को अपने जीवन दर्शन से जोड़कर प्रेरणास्पद बना दिया ।

पंजाब के जालंधर जिले में सतलुज नदी के किनारे तलवन उप नगर में सन् 1856 को (सम्वत् 1913) नानक चन्द के घर में जन्म हुआ। उच्च शिक्षा विभिन्न स्थानों (बलिया बनारस, बरेली इलाहाबाद) पर हुई, जीवन की स्वच्छन्ता अभिशाप बन गई, और धीरे-धीरे मद्य, मांस वेश्यावृत्ति में संलिप्त हो जीवन को नष्ट करने पर तुल गए। जीवन सुधार के लिए किए गए पिता के सभी प्रयास विफल रहे। अगस्त 1879 को महर्षि दयानन्द जी का बरेली में आगमन हुआ और पिता नानकचन्द ने स्वामी जी के व्याख्यान को सुना तो नास्तिक पुत्र के संशय निवृत्ति की आशा जगी स्वामी श्रद्धानन्द जी अपनी जीवनी में लिखते है कि पिता ने घर आते ही कहा बेटा मुन्शीराम ! एक दण्डी संन्यासी आए है । बड़े विद्वान् और योगीराज हैं, उनकी वक्तृता सुनकर तुम्हारे संशय दूर हो पाएंगे, कल मेरे साथ चलना। उत्तर में हाँ कह दी। परन्तु मन में वही भाव रहा कि केवल संस्कृत जानने वाला साधु बुद्धि की क्या बात करेगा। लेकिन दूसरे दिन जब उनके दर्शन किए तो उस दिव्य आदित्य मूर्ति को देखकर श्रद्धा उत्पन्न हुई।

प्रिय पाठकों समझ लीजिए कि मुंशीराम में श्रद्धानन्द बनने के लक्षण जागृत होने लगे। उन्होंने व्याख्यान सुना तो महर्षि की तर्क संगत एवं युक्ति-युक्त बाते सीधे उनके मन में घर करती गई।

वे अनायास महर्षि की ओर खिंचते चले गए। वे पक्के अनीश्वर वादी थे, लेकिन महर्षि के सौजन्य से वे प्रथम श्रेणी के आस्तिक बन गए। महर्षि द्वारा किए गए शंका समाधानों ने उनके समस्त संशय, भ्रम आदि समूल नष्ट कर दिए, उन्होंने महर्षि को अपना गुरु और पथ प्रदर्शक मान लिया। एक बार उन्होंने महर्षि से कहा कि- महाराज ! आपकी तर्क शक्ति बड़ी प्रबल है, अपने मुझे चुप तो करा दिया, परन्तु यह विश्वास नहीं दिलाया कि परमेश्वर की कोई हस्ती है।

ऋषिवर ने कहा कि - मैंने कब यह प्रतिज्ञा की थी कि मैं तुम्हारा विश्वास परमेश्वर पर करा दूंगा। तुम्हारा परमेश्वर पर विश्वास उस समय होगा जब वह प्रभु स्वयं तुम्हे विश्वासी बना देंगें। और कठोपनिषद् का यह मन्त्र कह सुनाया 'नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन' भाव है कि प्रभु की प्राप्ति ईश सम्बन्धी प्रवचनों के सुनने अथवा तीव्र बुद्धि से या अत्याधिक श्रुतिवान् बनने से नही होती। जिस किसी पर प्रभु अपनी कृपा करते हैं उसे अपना भक्त चुन लेते हैं। और इसी महामन्त्र की प्रेरणा ने मुन्शीराम को कल्याण मार्ग का पथिक महात्मा और अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती के राष्ट्रोत्कृष्ट पद पर स्थापित कराने में महान भूमिका निभाई। महर्षि द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर उनके मन में आर्य समाज के प्रति समर्पण की भावना जाग उठी और शीघ्र ही वे लाहौर आर्य समाज के अग्रणी नेता माने जाने लगे। धीरे-धीरे वे पूरे राष्ट्र के नेता बन गए। महात्मा मुंशीराम महर्षि द्वारा निर्देशित प्राचीन भारतीय 'शिक्षा-पद्धति' के परिपोषक थे। उन्हें दृढ़ विश्वास था कि गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली द्वारा ही मानव मात्र का बहुमुखी विकास सम्भव है। इसीलिए 1902 में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना ही नहीं की बल्कि अपनी सम्पत्ति को भी गुरुकुल निर्माण में लगा दिया और अपने पुत्रों को विद्यार्थी के रूप में समर्पित भी किया। आज यह गुरुकुल एक विश्व विद्यालय के रूप में विश्व में ख्याति अर्जित कर रहा है। इनके द्वारा गुरुकुल कुरुक्षेत्र, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ एवं कन्या गुरुकुल दिल्ली जो आज देहरादून में स्थानान्तरित हो चुका है तथा अनेक प्रसिद्ध गुरुकुलों की स्थापना की जो आज वेद मार्ग को पोषित करने में विशेष भूमिका निर्वहन कर रहे हैं।

महात्मा मुन्शीराम ने 12 अप्रैल 1917 को संन्यास ग्रहण करते समय उन्होंने कहा कि - "श्रद्धा मेरे जीवन की आराध्य देवी है, अब भी श्रद्धा भाव से प्रेरित होकर ही संन्यास आश्रम में प्रवेश कर रहा हूँ। इसीलिए इस यज्ञकुण्ड की अग्नि को साक्षी रखकर मैं अपना नाम 'श्रद्धानन्द' रखता हूँ, जिसमें मैं अगला सब जीवन भी श्रद्धा मय बनाने में सफल हो सकूँ।

राष्ट्र भाषा प्रेम - स्वामी श्रद्धानन्द जी को अपने श्रद्धेय गुरु से स्वराज्य, स्वदेश एवं स्वभाषा आदि उच्च आदर्श विरासत में प्राप्त हुए थे। गुरुकुल कांगड़ी में विज्ञान आदि विषयों सहित सभी विषय हिन्दी में पढ़ाए जाते थे। गुरुकुल से एक पत्र 'सद्धर्म-प्रचारक' उर्दू में निकलता था उसके ग्राहक उर्दू के जानने वाले ही थे। लेकिन एक दिन अचानक वह पत्र सब ग्राहकों के पास हिन्दी भाषा में पहुँचा। यह एक चुनौती ही थी। जिस व्यक्ति ने घोषणा की हो कि वह गुरुकुल में उच्च शिक्षा मातृ-भाषा हिन्दी में देने का प्रबन्ध करेगा उसका पत्र उर्दू में, यह कैसे हो सकता था ? वे किस प्रकार चुनौतियों का सामना करते थे, एक नही अनेक उदाहरण हैं। सत्याग्रह के समय जब जनता का जुलूस दिल्ली घंटाघर की ओर बढ़ रहा था, तब गोरे सिपाहियों ने जुलूस को रोकने के लिए गोली चलाने की धमकी दी थी। साधारण लोग ऐसी धमकी को सुनकर तितर-बितर हो जाते परन्तु श्रद्धानन्द ही था जिसने छाती तानकर गोरो को गोली चलाने के लिए ललकारा। इतिहास साक्षी है कि गोरों की संगीने उस निर्भीक राष्ट्रभक्त संन्यासी के सामने झुक गई। यह उनके अदम्य साहस का एक नमूना ही है।

गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका से स्वामी जी को एक पत्र लिखा था कि "आप अपने गुरुकुल के छात्रों को स्वतन्त्रता प्राप्ति के उच्च संस्कारों से सुशोभित कर रहे हैं। भारत लौटने पर मैं आपके चरणों में अपना शीश झुकाना चाहूँगा।"

रेम्जे मेकनाल्ड इंग्लैंड के प्रधानमंत्री थे। सन् 1924 में उन्होंने लिखा था "यदि कोई ईसा मसीह की मूर्ति बनाना चाहे तो वह स्वामी श्रद्धानन्द जी को अपने सम्मुख बिठाले तथा उनकी ही प्रतिमूर्ति बना ले।"

महात्मा गांधी उनको बड़ा भाई कहते थे। श्रद्धानन्द जी ने ही सर्वप्रथम उन्हें 'महात्मा' कह कर पुकारा था। स्वामी जी को अमृतसर के कांग्रेस अधिवेशन का स्वागताध्यक्ष बनाया गया। इससे कुछ समय पूर्व अमृतसर का जलियांवाला बाग काण्ड घटित हुआ था जिस कारण वहां कांग्रेस अधिवेशन करवाना असम्भव था। परन्तु महर्षि के उस अनन्य भक्त ने असम्भव को सम्भव कर दिखाया।

उन्होंने असहयोग आन्दोलन में भी अग्रणी नेता के रूप में कार्य किया। एक बार एक अंग्रेज अधिकारी ने पूछा कि- आप अपने गुरुकुल में बम भी बनाते है तो उनका स्पष्ट उत्तर था, हां। बनाता हूं। मेरा प्रत्येक छात्र एक बम ही तो है।

वे ऐसे आर्य नेता थे जिन्हें जामा मस्जिद के मिम्बर और स्वर्ण मन्दिर के अकाल तख्त साहब से प्रवचन करने का गौरव प्राप्त हुआ।

भारत वर्ष के ऐसे महापुरुषों के कन्धों पर चलकर ही यह भारतीय संस्कृति, वर्तमान में प्रफुल्लित हो रही है। 23 दिसम्बर 1926 का वह दिन हमारे लिए महान् क्षति का दिन था। आर्य समाज के एक स्तम्भ को महाप्रयाण की ओर अग्रसर करने वाला दिन था जब एक मतान्ध मुस्लिम ने उनकी हत्या कर दी।

आर्य समाज के लिए इस कमी को पूरा करना कठिन ही नही दुष्कर भी है। इस महान क्रान्तिकारी, राष्ट्र भक्त, संस्कृति पोषक, दलितोद्धारक अमर बलिदानी क्रान्ति की मशाल और महर्षि के सच्चे अनुयायी स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती को हमारा शत्-शत् नमन्। उनके महान बलिदान को यह राष्ट्र भुला नही पाएगा। राष्ट्र हमेशा उनका ऋणी रहेगा। अत: सम्पूर्ण राष्ट्र का यह कर्त्तव्य है कि- आने वाले उनके बलिदान दिवस पर हम यह प्रण लें कि हम उनके मिशन को सत्य और श्रद्धा से आगे बढ़ाएं उनके लिए यही हमारी सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी।

- प्रद्युम्न आर्य,
बड़ौत (बागपत)

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में दिल्ली सभा के तत्त्वावधान में गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से

आर्यसमाज आणंद में 10वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन सम्पन्न

जातिगत भेदभाव से ऊपर उठकर हों विवाह संस्कार - सुरेश चन्द्र अग्रवाल, उप प्रधान सार्वदेशिक सभा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा आयोजित दसवाँ आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन आणंद (गुजरात) में 23 नवम्बर 2014 को पहली बार आयोजित हुआ। आज इसकी अति महत्वपूर्ण आवश्यकता है। समाज राष्ट्र के कल्याण व पारिवारिक शांति की स्थापना हेतु आर्य परिवार बनाना अनिवार्य है, देर से ही सही गुजरात में प्रारंभ हुआ आर्य परिवारों का यह सम्मेलन। 'जातिगत भेदभाव से ऊपर उठकर हों विवाह' उक्त विचार कार्यक्रम के मुख्य अतिथि व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप-प्रधान तथा गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान सुरेशचन्द्र अग्रवाल ने गुजरात के आर्य समाज आनन्द में आयोजित समारोह में व्यक्त किये। श्री अग्रवाल ने कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि यह कार्यक्रम गुजरात में हो रहा है तथा आगामी प्रत्येक वर्ष इस कार्यक्रम का आयोजन गुजरात में किया जायेगा यह हमारा संकल्प है। कार्यक्रम के राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि अब तक हुए नौ सम्मेलनों के माध्यम से 385 परिवार आपस में जुड़े है जिनके रिश्ते संपन्न हुए हैं। समान गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर हों रिश्ते, जिससे परिवारों की आपसी मधुरता बढ़ेगी तथा परिवार में शांति व आपसी विश्वास का वातावरण बनेगा।

सम्मेलन के संयोजक एवं पूर्व महापौर जामनगर, डॉ. अविनाश भट्ट ने कहा कि महर्षि दयानन्द के कथनानुसार हम आर्य बनें तथा विश्व को आर्य बनावें।

आर्य समाज आणंद के प्रधान कनक सिंह बाघेला ने अपने संबोधन में कहा कि सामाजिक क्षेत्र में आर्य समाज ने सुधार के बहुत कार्य किये हैं

- शेष पृष्ठ 7 पर

परिचय सम्मेलन की पुस्तिका का विमोचन एवं परिचय देते प्रतिभागी। इस अवसर पर गुजरात सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल जी का सम्मान भी किया गया।

तत्काल पंजीकरण एवं अन्य काउंटरों पर सेवा देते कार्यकर्ता। उपस्थित प्रतिभागियों से भरा हॉल एवं मेल मिलाप करते आर्य परिवारों के प्रतिभागी एवं अभिभावक

श्री रामनाथ सहगल आजीवन उपलब्धि पुरस्कार से सम्मानित

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति के संयुक्त तत्वावधान में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, राजेन्द्र नगर, साहिबाबाद, गाजियाबाद उत्तर प्रदेश में 24 नवम्बर, 2014 को आयोजित महात्मा हंसराज दिवस के अवसर पर प्रतिवर्ष दिये जाने वाले सम्मान समारोह में आर्यसमाज के प्रसिद्ध समाज सेवी श्री रामनाथ सहगल को उनकी आयु के 90 वर्ष पूर्ण होने पर आर्य समाज और डी.ए.वी. को दी गई सेवाओं के लिए आजीवन उपलब्धि पुरस्कार (लाइफ टाइम एचीवमैंट अवार्ड) से सम्मानित किया गया। यह सम्मान श्री पूनम सूरी, प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रदान किया गया।

आर्य समाज हनुमान रोड का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज हनुमान रोड का वार्षिकोत्सव 10 से 16 नवम्बर तक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर यज्ञ स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती के ब्रह्मत्व में यज्ञ एवं भजन श्री रामनिवास शास्त्री के हुए। मन्त्रपाठ गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारियों ने किया। सायं कालीन सत्रों में स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने वेदानुकूल सामाजिक व्यवस्था, ईश्वरीय आनन्द प्राप्ति के साधन, मानव चरित्र निर्माण कैसे हो आदि विषयों पर सारगर्भित व्याख्यान हुए। 15 नवम्बर को रतनलाल सहदेव भाषण प्रतियोगिता हुई जिसमें विभिन्न स्कूलों तथा गुरुकुलों के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया और कु० रिया गर्ग (आक्सफोर्ड सी. सै. स्कूल विकासपुरी नई दिल्ली) ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। समापन समारोह एवं यज्ञ पूर्णाहुति 16 नवम्बर को हुई। कार्यक्रम का संचालन मन्त्री श्री दयानन्द यादव ने किया।

- कर्नल रवीन्द्र कुमार वर्मा, पधान

प्रथम पृष्ठ का शेष

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन.....

इस समय वहां के प्रधान श्री शिवेन्द्र प्रताप सिंह हैं। सार्वदेशिक सभा की ओर से प्रेषित सम्मेलन के प्रस्ताव पर आर्य समाज बैंकॉक की कार्यकारिणी ने विचार विमर्श कर आयोजन करने का निर्णय लिया।

कार्यक्रम अत्यन्त सफल, प्रेरणास्पद और थाईलैण्ड के आर्यों को नव चेतना प्रदान करने वाला रहा। सनातन धर्म के अन्य मतावलम्बी भी इसमें सम्मिलित हुए और कार्यक्रम के विभिन्न आयोजनों में भाग लिया।

सार्वदेशिक सभा का यह प्रयास इस रूप में 94 वर्ष पश्चात् थाईलैण्ड में पहली बार सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम से स्थानीय आर्य समाज को बहुत लाभ हुआ। अनेक पौराणिक विचारधारा व अन्य सम्प्रदायों के व्यक्तियों ने आर्य समाज के साथ जुड़कर सहयोग का आश्वासन दिया।

कार्यक्रम की भव्यता में भारत से लगभग 225 यात्री व भारत के अतिरिक्त अमेरिका, आस्ट्रेलिया, इंग्लैण्ड, मॉरीशस, नेपाल, आदि देशों के प्रतिनिधि भी सम्मिलित हुए थे। थाईलैण्ड के अतिरिक्त अन्य देशों से सम्मिलित प्रतिनिधियों की संख्या 300 से अधिक थी।

विभिन्न सत्रों में अलग-अलग विषयों पर सम्मेलनों का आयोजन किया गया था, इसमें मुख्यत: वेद सम्मेलन, युवा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, विदेशों में प्रचार-प्रसार हेतु योजना आदि पर वक्ताओं ने सारगर्भित विचार व्यक्त किये। इन सम्मेलनों में विभिन्न देशों से पधारे एवं स्थानीय वक्ताओं ने भाग लिया।

उद्घाटन समारोह में बैंकॉक के सम्माननीय व्यवसायी सरदार श्री गुरुमुख सिंह सचदेव, श्री दिग्विजय सिंह, श्री बी. के. दत्त, श्री राम प्लेट पाण्डे, श्री बिरेन्द्र सिंह उपस्थित थे।

भारतवर्ष से स्वामी देवव्रतजी, स्वामी ऋतस्पतिजी, आचार्य ज्ञानेश्वर जी, डॉ. सोमदेव शास्त्री, डॉ. रामकृष्ण शास्त्री, डॉ. प्रियव्रतदास जी, स्वामी राजेन्द्र जी आदि विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किए। ब्रह्मचारी राजसिंह आर्य द्वारा यज्ञ सम्पन्न करवाया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक उप प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा श्री आर्य सुरेशचन्द्र जी अग्रवाल थे। आपके द्वारा पूरे कार्यक्रम की योजना व संचालन व्यवस्था रची गई थी, जो पूर्णत: सफल रही। कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी आर्यजन बहुत संतुष्ट व प्रसन्न दिखाई दिए। इस यात्रा में दर्शनीय स्थलों का भ्रमण भी करवाया गया जो सभी के लिए सुखद व नवीन अनुभव रहा।

कार्यक्रम में महाशय धर्मपाल जी द्वारा आर्य समाज बैंकॉक को 11,00,000/- ग्यारह लाख रुपए की राशि भी दान स्वरूप प्रदान करने की घोषणा की। श्री धर्मपाल आर्य ने 10 वेदों के सेट सभा को प्रदान किए। श्री राजसिंह आर्य, श्री विनय आर्य, श्री धर्मपाल आर्य आदि आर्य महानुभावों का कार्यक्रम में बहुत सराहनीय व महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा। परमात्मा की कृपा से दोनों देशों के कार्यक्रम व 15 दिवसीय प्रयास बिना किसी बाधा के सम्पन्न हुआ।

- प्रकाश आर्य, मन्त्री,
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
नई दिल्ली

(ऊपर) बैंकॉक में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर यज्ञ कराते ब्र. राजसिंह आर्य जी। (नीचे) दिल्ली सभा के प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य जी को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित करते बैंकॉक आर्यसमाज के पदाधिकारी एवं इसी अवसर पर भारतीय प्रतिनिधियों में सम्मिलित मातृशक्ति एवं आर्यजन।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन बैंकॉक-2014 के अवसर पर देश-विदेश के प्रतिनिधियों से भरा पण्डाल

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन सिंगापुर एक संस्मरण

वर्ष 2006 में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली में किये गये निर्णय के अनुसार प्रत्येक पाँचवें वर्ष भारत में तथा प्रत्येक वर्ष विश्व के अन्य देशों में आर्य महासम्मेलन हुआ करेंगे। उपरोक्त निर्णय के अनुसार इस वर्ष सिंगापुर एवं बैंकॉक में दिनांक क्रमश: 1 एवं 2 नवम्बर तथा 8 एंव 9 नवम्बर 2014 को अन्तर राष्ट्रीय महासम्मेलन सम्पन्न हुये। इन सम्मेलनों से यह बात सिद्ध हुई कि वर्ष 2006 में लिया गया निर्णय कितना महत्त्वपूर्ण एवं सटीक था। सार्वदेशिक (इंटरनेशनल आर्यन लीग) आर्य प्रतिनिधि सभा का नाम सार्थक हुआ है।

अन्य देशों में जहाँ आर्य समाज हैं और वहाँ गतिविधियों का अभाव होते हुए भी वहाँ के लोगों ने आर्यसमाज की मशाल जगाये रखने में कितना त्याग व श्रम किया इससे भी परिचित होते हैं।

सिंगापुर में आर्य समाज को स्थापित हुए 100 वर्ष हो गये और आर्य महासम्मेलन के साथ शताब्दी समारोह भी मनाया गया। वहाँ के ओ.पी. राय के परिवार का बड़ा योगदान है। सिंगापुर में आर्य समाज की स्थापना मोरिशस से आकर वहाँ के लोगों ने की। समाज का कार्य चलाने के लिए किराये का मकान लेना पड़ता था। आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए चेरिटी शो करने पड़ते थे। लेकिन आज उनके पास न केवल स्वयं का भवन है वरण उनके पूरे सिंगापुर में 60 आर्य समाज चल रहे हैं जिससे कि सिंगापुर सुदृढ़ आर्थिक स्थिति में है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि सिंगापुर में हिन्दी को बढ़ावा व शिक्षण केवल आर्य समाज द्वारा किया जा रहा है जिससे वहाँ की सरकार व जनता में बड़ा प्रभाव है। आर्य समाज के 8वें नियम "अविद्या का नाश और की वृद्धि" का पालन हो रहा है। गरीब बच्चों को नि:शुल्क शिक्षा दी जा रही है। विद्यालयों की शिक्षक/ शिक्षिकाओं का सम्मेलन में पूर्ण मनोयोग से समर्पित करते हुए देखा। इससे यह प्रेरणा मिली कि यदि हमारी निष्ठा हमारे सिद्धान्तों में पूर्णरुप से है तो सफलता अवश्य मिल सकती है।

- भगवानदास अग्रवाल (म.प्रदेश)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यों पर विशेष नोट

सामान्य तौर पर आर्यजन सभाओं की कार्य प्रणाली से अधिक परिचित नहीं हैं। प्रस्तुत लेख सभा की साधारण सभा में प्रस्तुत किया गया था। अधिक से अधिक लोग सभा की कार्यप्रणाली और जिम्मेदारियों को जान सकें तथा उनमें सहयोग कर सकें, इसलिए यह लेख प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है आप इसे ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे एवं सभा के कार्यों में सहभागी बनेंगे। सभा की गतिविधियों में मासिक/वार्षिक सहयोग प्रदान करने के लिए aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें अथवा पत्र द्वारा सम्पर्क करें। *- धर्मपाल आर्य, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का कार्य बहुमुखी प्रकृति का है। एक ओर सभा का कार्य रिकार्ड रखने सम्बन्धी है जिसके अन्तर्गत दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की भूमि सम्बन्धी, स्थिति सम्बन्धी, सभा से सम्बद्ध, आर्य समाज की स्थापना के बारे में रिकार्ड रखे जाते हैं। सभा से सम्बन्धित सभी विद्यालयों के आवश्यक दस्तावेज जिसमें सरकार से मान्यता दिलाने सम्बन्धी कागजात भी सम्मिलित हैं का रिकार्ड रखा जाता है। सम्पत्तियों पर किराएदारी सम्बन्धी, कब्जे सम्बन्धी, मुकदमेबाजी होने पर सभा उसमें एक आवश्यक पार्टी बनकर आर्यसमाज के हित में कार्य करती है। जिन मार्गों, चौक तथा पार्क आदि का नामकरण महर्षि दयानन्द, उनके अनुयायी अथवा आर्यसमाज के नाम से रखा जाता है, सरकार द्वारा उनके लिए पारित प्रस्तावों तथा उन सड़कों के नामकरण आदि के चित्रों को रिकार्ड में रखने का प्रयत्न होता है। इतिहास को बनाए रखने की दृष्टि से आर्यसन्देश तथा आर्यसमाज की प्रमुख पत्रिकाओं का रिकार्ड पूर्ण रूप से रखने का प्रयत्न होता है। इसके लिए अलग से स्टोरेज की व्यवस्था की गई है।

रिकार्ड सम्बन्धी कार्य :-दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली की किस समाज में कौन से अधिकारी हैं तथा उनके चुनाव समय पर हो रहे हैं या नहीं, आर्यसमाजों में क्या-क्या गतिविधियां संचालित हो रही हैं, इसका भी रिकार्ड रखने का प्रयास करती है। दिल्ली राज्य क्षेत्र में आर्यसमाज की मान्यताओं के अन्तर्गत चलने वाले विद्यालयों, गुरुकुलों, अनाथालयों, आदि का भी रिकार्ड रखती है।

प्रशासनिक कार्य :- यह दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। इसके अन्तर्गत सभा से सम्बन्धित सभी आर्यसमाज का समय पर चुनाव करवाना, विवाद की अवस्था में निर्णय करना, आवश्यकता पड़ने पर तदर्थ समितियों का गठन करना, तदर्थ समिति के माध्यम से आर्यसमाज के कार्यों को संचालित करना, विद्यालयों की समितियों का गठन करना, आर्यसमाज में होने वाले विवाहों के सम्बन्ध में समय-समय पर निर्देश एवं जानकारियां देते रहना, आर्यसमाजों में विवाह करवाने सम्बन्धी प्रमाण पत्र जारी करना।

सम्पत्ति सुरक्षा :- आर्यसमाज के पास विपुल सम्पत्ति है। इस कारण इस पर अनेक लोगों की नजरें हमेशा लगी रहती हैं। जरा सा कमजोर पड़ने पर वे लोग बहुत ही जल्दी इन सम्पत्तियों पर कब्जा करने की फिराक में रहते हैं। सभा का सम्पत्ति विभाग इन मामलों पर पूरी दृष्टि रखता है तथा समय-समय पर सम्बन्धित लोगों को उचित दिशा-निर्देश भी देता है। जिन आर्यसमाजों में सम्पत्तियां पूरी तरह किन्हीं कारणवश कुछ लोगों द्वारा कब्जे में कर ली जाती है, उनको भी पहले सभी आर्यजनों के सहयोग से खाली कराकर अपने कब्जे में लेने के कार्य तथा बाद में आवश्यकता पड़ने पर मुकदमें करने और उन मुकदमों को अपने पक्ष में लाने के लिए कार्य करना। जैसा कि आर्यसमाज देव नगर, सागरपुर, झिलमिल कालोनी, अनाजमंडी तथा ऐसी अन्य आर्यसमाजों में हुआ है। उनके मुकदमें लम्बे समय तक चलते हैं। सभा उन सभी मुकदमों में मुख्य पार्टी बनकर आर्यसमाज के हित में कार्य करती है। जिस प्रकार से आर्यसमाज सागरपुर, आर्यसमाज गोविन्दपुरी, आर्यसमाज नजफगढ़, आर्यसमाज ग्रीन पार्क, आर्यसमाज रेलवे रोड रानीबाग, आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-2 आदि। हर सम्भव सहायता समाज के अधिकारी जिस प्रकार भी चाहें सभा देने का प्रयत्न करती है।

वर्तमान में सभा उन सम्पत्तियों पर विशेष योजना बनाने में जुटी है जिन पर अब तक अनेक प्रयास करने पर भी कोई भी गतिविधि संचालित नहीं की जा सकी है। ऐसे प्रयास सफल भी हुए हैं।

सूचना सम्बन्धी :- सभा दिल्ली के आर्यसमाज तथा आर्यसमाज से जुड़े समस्त आर्यजनों को आर्यसमाज के कार्यक्रमों सम्बन्धी, उत्सवों सम्बन्धी, तथा अन्य सभी सूचनाएं पहुंचाने के लिए आर्यसन्देश के माध्यम से कार्य करना। आर्यसमाज के वरिष्ठ नेताओं, विद्वान, संन्यासियों के मृत्यु आदि के समय उनकी सूचनाएं समस्त आर्यजनों तक पहुंचाने के लिए कार्यालय से विशेष व्यवस्थाएं की जाती हैं। वर्तमान तकनीकी का लाभ लेते हुए एस.एम.एस., ईमेल, फेसबुक और ट्वीटर के माध्यम से भी सूचनाएं प्रेषित की जाती हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न अवसरों पर पत्रों द्वारा, परिपत्रों द्वारा, ईमेल द्वारा दुनिया के विभिन्न भागों में सूचनाओं को भेजने का क्रम चलता रहता है। वर्तमान में आर्यसन्देश ईमेल द्वारा भी सबको प्रेषित किया जा रहा है जिसे पूरी दुनिया में पढ़ा जाता है।

राष्ट्रीय एवं सामाजिक मुद्दों के सम्बन्ध में जागरुकता एवं आन्दोलन सम्बन्धी :- ऐसे कोई भी सामाजिक मुद्दे अथवा राष्ट्रीय मुद्दे जो आर्यसमाज की विचारधारा के अनुसार राष्ट्र एवं समाज को नुकसान पहुंचाने वाले हों, उनके लिए सभा हर समय कार्य करने के लिए तत्पर रहती है। जैसे विद्यालयी शिक्षा में यौन शिक्षा लागू करने सम्बन्धी सरकारी प्रस्ताव, धर्मान्तरित ईसाइयों के लिए आरक्षण का विरोध, गौहत्या सम्बन्धी कानून को बनाने हेतु दबाव, अल्पसंख्यक तुष्टिकरण के सम्बन्ध में राजनीतिज्ञों को अपनी भावना से अवगत कराना। इन सभी मुद्दों के लिए आवश्यक बैठकें की जाती रही हैं। मुद्दों पर समर्थन हेतु हस्ताक्षर अभियान चलाए जाते हैं। गौहत्या मुद्दे पर प्रदर्शन, गंगा बचाओ आन्दोलन में सहयोग आदि में निरन्तर सभा की ओर से आवश्यक सहयोग दिया जाता रहा है।

कार्यक्रम आयोजन सम्बन्धी :- दिल्ली में बड़े पर्वों को आयोजित करने के लिए आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य कार्यरत है। चूंकि सभी उत्सव दिल्ली की सभी आर्यसमाजों के सहयोग से किए जाते हैं अत: दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का विशेष दायित्व बनता है कि सभा इन उत्सवों में विशेष सहयोग प्रदान करे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली को इन उत्सवों के आयोजन के लिए हर प्रकार का सहयोग प्रदान करती है। आर्य केन्द्रीय सभा की सब सूचनाओं को प्राथमिक रूप से आर्यसन्देश में प्रकाशित किया जाता है तथा कार्यक्रम उपरान्त प्रथम पृष्ठ पर रिपोर्ट एवं वैबसाइट्स पर भी अच्छे प्रकार से प्रसारित किया जाता है।

इन कार्यक्रमों के अतिरिक्त सभा द्वारा कुछ अन्य पर्वों का आयोजन किया जाता है, जैसे - महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मोत्सव। इस अवसर पर विशाल भजन संध्या का आयोजन महर्षि दयानन्द जी को समर्पित किया जाता है। जिसमें दिल्ली के सभी प्रबुद्ध आर्यजन, आर्यसमाजों के अधिकारी, सदस्य कार्यकर्त्ता एवं आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के आर्यवीर प्रमुखता से भाग लेते हैं। इस अवसर पर आर्यसमाज के कार्यों में संलग्न विशेष विभूतियों का सम्मान भी किया जाता है।

दिल्ली का सम्भवत: सबसे बड़ा आयोजन आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह भी गत अनेक वर्षों से सभा के तत्त्वावधान में मनाया जा रहा है। सभा का प्रयास है कि दिल्ली में दिल्ली के सभी आर्य परिवार अपने सभी पारिवारिक सदस्यों सहित इसमें भाग लें तथा यह पर्व अपने आप में ऐसा रूप ले चुका है कि वर्ष-प्रतिवर्ष इसमें भाग लेने वाले आर्य परिवारों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। इस अवसर पर अनेक गणमान्य लोगों का सम्मान किया जाता है। इस अवसर पर होने वाले वृहद यज्ञ में आर्यसमाज के सम्मानीय परिवार यजमान बनते हैं। बच्चों के मनोरंजन के लिए विशेष प्रयास किए जाते हैं।

आर्य विद्या परिषद् के तत्वावधान में होने वाले कार्यक्रम, आर्य वीर दल तथा आर्य वीरांगना दल के तत्त्वावधान में होने वाले कार्यक्रमों में, जोकि दिल्ली प्रान्तीय स्तर के होते हैं, सभा हर प्रकार सहयोग प्रदान करती है तथा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। चाहे आर्यवीर-वीरांगना एकत्रीकरण, चाहे प्रान्तीय शिविरों का आयोजन। नई आर्यसमाजों की स्थापना के लिए होने वाले आयोजनों में सभा हर प्रकार का सहयोग प्रदान करती है।

प्रकाशन सम्बन्धी कार्य :- आर्यसमाजों के सिद्धान्तों का प्रचार करना सभा का मुख्य दायित्व भी है। इसी के अन्तर्गत सभा अनेक पुस्तकों तथा अन्य प्रचार सामग्रियों का प्रकाशन करती है। छोटे-छोटे प्रचार के साधन, दूर-दराज के क्षेत्रों में प्रचार के सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण भूमिका रखते हैं। इसी बात को ध्यान में रखते हुए सभा ओ३म स्टीकर, गायत्री मन्त्र की पट्टिकाएं, ओ३म् ध्वज, शगुन लिफाफे, दैनिक यज्ञ पद्धति, वेद तथा वैदिक सिद्धान्तों आदि के पत्रकों, महर्षि दयानन्द कृत साहित्य, प्रचारार्थ सीडी, वीसीडी का प्रकाशन करती है। वर्तमान में सभा के प्रयास से प्रकाशित कॉमिक्स की सारे देश में विशेष मांग है। सभा द्वारा आर्यसमाजों में संचालित विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए नैतिक शिक्षा की पुस्तकों को भी प्राकशित किया गया है।

विक्रय सम्बन्धी कार्य :- आर्यसमाज के प्रचार प्रसार के लिए आवश्यक सामग्री तथा दैनिक उपयोग में आने वाली सभी वस्तुओं को जन-साधारण तक कम से कम मूल्य पर पहुंचाने के लिए सभा विक्रय विभाग की व्यवस्था करती है। इसके अन्तर्गत आर्यसमाज का महत्त्वपूर्ण साहित्य, महर्षि दयानन्दकृत साहित्य, भजनों, यज्ञादि की सीडी, स्टीकर, कैसेट, घड़ियां तथा हवन सामग्री बिक्री के लिए रखी जाती हैं। प्रचार सामग्री को जन साधारण तक पहुंचाने के लिए सभा द्वारा विभिन्न आयोजनों के अवसर पर स्टाल भी लगाए जाते हैं। सभा के एम. डी.एच. वेद प्रचार वाहन द्वारा एवं पुस्तमक मेलों द्वारा अब सारे भारत एवं विदेशों में सभा के माध्यम से आर्यसमाज के उत्सवों में आर्यजनता तक सामान पहुंचाया जाता है। इन सामानों के आर्डर निरन्तर सभा को प्राप्त होते हैं।

प्रचार सम्बन्धी कार्य

वैबसाईट्स द्वारा प्रचार :- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा महत्वपूर्ण वैबसाइट - www.thearyasamaj.org के द्वारा प्रचार कार्य किया जाता है। इस वैबसाइट का निर्माण, संचालन, अपग्रेडेशन आदि सभी कुछ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा ही किया जाता है। सारे विश्व में इस समय वैबसाईट पर सबसे अधिक लोग आ रहे हैं। इसका विस्तृत विवरण पृथक से दिया गया है।

वेद प्रचार विभाग द्वारा प्रचार :- इसके अन्तर्गत सभा विद्वानों को साप्ताहिक सत्संगों तथा अन्य आयोजकों के लिए विभिन्न आर्यसमाजों में मांग अनुसार भेजा जाता है। अब काफी आर्यसमाजों में सभा के अधिकारी और सभा के विद्वान जाकर प्रचार कार्य कर रहे हैं।

सार्वजनिक स्थानों पर प्रचार :- दिल्ली स्थित केन्द्रीय कारागार तिहाड़, नई दिल्ली में वर्ष भर प्रत्येक मास की पूर्णिमा को जेल नं 5 में यज्ञ तथा विशेष अवसरों पर भजन संध्या आदि का

- शेष पृष्ठ 8 पर

आर्यसमाज रेलवे रोड शकूर बस्ती रानी बाग का
वार्षिकोत्सव एवं आर्य शिक्षण केन्द्र की स्थापना

आर्यसमाज गुरु हरिकिशन मार्ग, रेलवे रोड शकूर बस्ती रानी बाग का वार्षिकोत्सव समारोह 19 अक्तूबर, 2014 को आयोजित किया गया। इस अवसर पर आर्य शिक्षण केन्द्र की स्थापना भी की गई। इस अवसर पर आर्यसमाज के अधिकरियें के साथ निवर्तमान सभा प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य जी।

आर्यों के तीर्थ गुरुकुल मंझावली में चतुर्वेद पारायण यज्ञ एक बार अवश्य पहुंचकर धर्मलाभ प्राप्त करें

गुरुकुल के 21 वें वार्षिकोत्सव पर सवा करोड़ गायत्री तथा चतुर्वेद ब्रह्म-पारायण महायज्ञ एवं योग साधना शिविर 4 अक्टूबर 2014 से 8 मार्च 2015 तक विशिष्ट आयोजन के साथ संपन्न होगा। महोत्सव का उद्घाटन प्रसिद्ध उद्योगपति महाशय धर्मपाल जी (एम.डी. एच.) उद्घाटन कार्यक्रम के संयोजक ब्र. राजसिंह आर्य प्रधान (दि.आ.प्र.स.) श्री विनय आर्य महामंत्री (दि.आ.प्र.स.) एवं स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी की उपस्थिति तथा स्वामी चित्तेश्वरानन्द के सान्निध्य में हुआ। महाशय जी ने गायत्री महायज्ञ आहुति देने हेतु 1100000/- रुपये देने की घोषणा की। 16 दिनों तक मैंने यज्ञ व योग साधना में भाग लिया, बहुत अच्छा लगा। भक्तिमय वातावरण, श्रेष्ठ दिनचर्या, उत्तम भोजन व्यवस्था, दूध व फल आदि एवं अन्य सभी आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध हैं। मैं अधिक क्या लिखूं? आप स्वयं इस दिव्य वातावरण में उपस्थित होकर अपनी आत्मा को भोजन दें, व धर्मलाभ प्राप्त करें। वास्तव में यह सौभाग्य ईश कृपा से ही प्राप्त होता है।

- एस.पी. सिंह, मंत्री
आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली

महिला डॉक्टर चाहिए

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिल्ली ग्रामीण क्षेत्र में संचालित दीवानचन्द स्मारक गोकुलचन्द आर्य चिकित्सालय औचन्दी, दिल्ली-110039 हेतु एक एम. बी.बी.एस. महिला डी.जी.ओ. की आवश्यकता है। उचित वेतन के साथ-साथ आवास की सुविधा प्रदान की जाएगी। सम्पर्क करें - **श्री महेन्द्र सिंह, मन्त्री**
मो. 09999148483

फ्री हैल्थ कैम्प लगवाएं

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में आर्य समाज एवं आर्य संस्थाओं में फ्री हेल्थ कैम्प लगाने के लिए श्री विजय दीक्षित जी से सम्पर्क कर सुविधा का लाभ जन सामान्य तक पहुँचाने का महान कार्य करें। सम्पर्क करें -

विजय दीक्षित
9868787522, 9213499532

पृष्ठ 4 का शेष

तथा समाज की नवरचना की है व मानव निर्माण की भूमिका अदा की है।

वृहद् सौराष्ट्र आर्य प्रादेशिक सभा के प्रधान रणजीत सिंह परमार ने कहा कि गुजरात प्रदेश के अन्य नगरों में भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित किये जाएं।

कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलन तथा ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना के मंत्रो के सामूहिक पाठ के साथ हुआ तत्पश्चात् उपस्थित महानुभावों ने परिचय विवरण पुस्तिका का विमोचन किया।

तत्काल युवक-युवती वैवाहिक रजिस्ट्रेशन, बैज वितरण जिसमें अलग-अलग रंग के बैज युवक पक्ष-युवती पक्ष व प्रतिभागी को दिये जाने वाले काउन्टर खोले गए, जिनमें एक काउन्टर 'मेल- मिलाप' समिति का बनाया गया था जिसमें समाज के बुजुर्ग लोगों ने आपसी बातचीत में सहयोग दिया। आर्य समाज जिला सभा कोटा व आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की ओर से आर्य शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उप-प्रधान, गुजरात प्रांतीय सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल का राजस्थानी साफा, मोतियों की माला तथा शॉल ओढाकर एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का संचालन गुजरात प्रान्तीय सभा के मन्त्री श्री हंसमुख भाई परमार एवं कोटा से पधारे रामप्रसाद याज्ञिक द्वारा किया गया। आर्य समाज आनन्द के मंत्री अशोक भाई पटेल ने सभी अतिथियों, आगन्तुकों व सहभागियों का तथा गुजरात प्रांतीय सभा का आभार व्यक्त किया।

- अर्जुनदेव चड्ढा, रा.संयोजक

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द का 88वां बलिदान समारोह

आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव तथा आर्य समाज शिवाजी नगर गुड़गांव के संयुक्त तत्त्वावधान में अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द का 88 वाँ बलिदान समारोह 19, 20, 21 दिसम्बर 2014 को बड़े समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है। भाषण प्रतियोगिता 16 दिसम्बर प्रात: 10 बजे आर्य विद्या मन्दिर 7 सैक्टर गुड़गाँव, भजन संध्या 19 दिसम्बर सायं 5 से 8 बजे तक आर्य समाज शिवाजी नगर गुड़गाँव, विशाल शोभा यात्रा 20 दिसम्बर प्रात: 9:30 से 3:00 बजे आर्य समाज शिवाजी नगर गुड़गाँव से विभिन्न स्थलों से चलकर आर्य समाज भीम नगर में सम्पन्न होगी। श्रद्धांजलि सभा 21 दिसम्बर प्रात: 9:30 से 1:30 बजे तक आर्य समाज शिवाजी नगर गुड़गाँव के निकट विशाल मैदान में आयोजित की जाएगी। आर्यजन पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

- कन्हैया लाल आर्य,

आर्ष गुरुकुल नोएडा का
वार्षिकोत्सव व यजुर्वेदीय यज्ञ

17 से 21 दिसम्बर 2014

यज्ञ - प्रात: 7.30 से 9.30 बजे
ब्रह्मा - आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार
वेदपाठ - ब्रह्मचारी आर्ष गुरुकुल नोएडा
वेदकथा : डॉ. सोमदेव शास्त्री (मुम्बई)
भजन- पं. भानुप्रकाश शास्त्री (बरेली)

19 दिसम्बर: प्रात: 9:30 बजे
अन्तर्गुरुकुलीय संस्कृत प्रतियोगिता
समय - प्रात: 9.30 से 1.00 बजे
मुख्य अतिथि -श्री धर्मपाल आर्य (प्रधान दि. आ. प्र. सभा)
वि. अतिथि-डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री

बलिदान सम्मेलन : 21 दिसम्बर
मुख्य अतिथि -श्री राजनाथ सिंह जी (गृहमन्त्री, भारत सरकार)
समारोह अध्यक्ष : डॉ. अमिता चौहान जी
वक्ता : स्वामी प्रणवानन्द जी, डॉ. सोमदेव शास्त्री, साध्वी उत्तमा यति, डॉ. वीर पाल विद्यालंकार एवं डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार।
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

- कै. अशोक गुलाटी, मन्त्री

सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव एवं योग साधना-योग चिकित्सा शिविर का आयोजन

दिनांक : 13 से 18 जनवरी, 2015
शिविर स्थल : पटेल प्रगति मंडल, हनीपार्क रोड, अडाजन, सूरत (गुजरात)
विशेष नोट : जलपान, भोजन एवं आवास की समुचित व्यवस्था नि:शुल्क रहेगी।
आयोजक : आर्य समाज मन्दिर भटार
0261-2234084, 2273676

आर्यसमाज, मण्डी डबवाली का
वार्षिक वेद प्रचार उत्सव

समापन समारोह : 14 दिसम्बर, 2014

हवन यज्ञ पूर्णाहुति, भजन एवं प्रवचन
प्रात: 9 बजे से 12 बजे तक

- मन्त्री

आर्यसमाज भगवती नगर गंगापुरसिटी में
यजुर्वेद पारायण महायज्ञ

25-31 दिसम्बर 2014

यज्ञ, भजन-प्रवचन -प्रात: 8 से 11बजे
भजन-प्रवचन- रात्रि 7.30 -9.30 बजे
विशेष अतिथि -स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती

- शम्भू दयाल आर्य, मंत्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

आवश्यकता है

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं की शिरोमणि नियन्त्रक संस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) निम्न लिखित पदों के लिए आवेदन आमन्त्रित करती है-

4. हिन्दी टाईपिस्ट/अशुलिपिक : जो हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी में भी कार्य कर सकें तथा डी.टी.पी. का भी ज्ञान हो।
5. एकाउंटेंट : पूर्ण अनुभवी हों।
6. ड्राइवर : कमर्शियल लाइसेंस एवं बैज वालों को वरियता।

सभी पदों के लिए अनुभवी योग्य उम्मीदवारों की आवश्यकता है। योग्यता के अनुसार वेतन सहित अन्य सुविधाएं दी जाएंगी। गुरुकुलीय पृष्ठभूमि के उम्मीदवारों को वरीयता दी जाएगी। इच्छुक उम्मीदवार अपना बायोडाटा भेजें।

Email:aryasabha@yahoo.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सार्वजनिक स्थलों पर साहित्य प्रचार

चण्डीगढ़ पुस्तक मेला

स्थान : परेड़ ग्राउंड, सैक्टर-17, चण्डीगढ़

19 दिसम्बर से 28 दिसम्बर, 2014 : प्रात : 11 बजे

कटक पुस्तक मेला

स्थान : बलियात्रा ग्राउंड (किल्ला पड़िया)
बाराबंकी स्टेडियम के सामने, कटक (उड़ीसा)

18 से 26 दिसम्बर, 2014 : प्रात : 11 बजे

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यकर्त्ताओं का उत्साहवर्धन करें तथा अधिकाधिक संख्या में जन सामान्य को पुस्तक मेले में सभा के साहित्य प्रचार स्टाल पर पहुंचने के लिए प्रेरित करें

निवेदक :-दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 8 दिसम्बर से रविवार 14 दिसम्बर, 2014

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 11/12 दिसम्बर, 2014

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 10 दिसम्बर, 2014

पृष्ठ 6 का शेष

आयोजन किया जाता है। इसके अलावा ग्रामीण क्षेत्र के उन गांवों में विशेष प्रचार कार्य निरन्तर चल रहे है जहां पर अभी तक कोई भी आर्यसमाज नहीं है।

विश्व पुस्तक मेलों के माध्यम से प्रचार :- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रति दो वर्ष में दिल्ली के प्रगति मैदान में लगने वाले विश्व पुस्तक मेले में प्रचार कार्य करती है। इन मेलों में आर्यसमाज के समस्त साहित्य को जनसाधारण में विक्रय एवं वितरण के लिए उपलब्ध कराती है। भविष्य में सभा ने दिल्ली के बाहर अन्य स्थानों पर लगने वाले पुस्तक मेलों में भी प्रचार कार्य करने की योजना बनाई। पहले हम सब प्रान्तों में लगाने वाले पुस्तक मेलों की सूचना स्थानीय सभा/आर्यसमाज को भेजते थे और उन्हें लगाने की प्रेरणा देते थे। किन्तु किसी प्रान्तीय सभा ने इस कार्य को आगे नहीं बढ़ाया। जब सभा ने यह देखा कि भारत के सभी पुस्तक मेलों में नि:शुल्क कुरान, बाइबिल बांटी जा रही है। मुसलमानों के 5-10 स्टाल होते हैं तो सार्वदेशिक सभा के निर्देश पर सम्भव सभी पुस्तक मेलों में स्टाल लगाने का निर्णय किया। उसी का परिणाम है कि त्रिवेन्द्रम, श्रीनगर, पटना, लखनऊ, बरेली, कटक, गुवाहाटी, अहमदाबाद, मुम्बई, चेन्नई आदि में आयोजित पुस्तक मेलों मे भागीदारी की गई है।

राजनेताओं से सम्पर्क सम्बन्धी कार्य :- राजनीति सत्ता का स्रोत है। आर्यसमाज के अनेक कार्यों में सरकार की भागीदारी होती है। सरकार का सहयोग लेकर कुछ योजनाओं को संचालित किया जा सकता है। आर्यसमाज के संगठन तथा सम्पत्तियों की सुरक्षा सम्बन्धी ऐसी समस्याएं आ खड़ी होती हैं जब राजनेताओं का सहयोग आवश्यक हो जाता है। इस हेतु सभा अधिकारियों का प्रयास होता है कि आर्यसमाज के संगठन के सभी प्रमुख राजनैतिक दलों के लोगों का परिचय बना रहे। इस हेतु सामान्य शिष्टाचार रखने का प्रयत्न सभा की ओर से किया जाता है, इसके लिए सभी अवसरों का उपयोग लिया जाता है।

सेवा कार्य सम्बन्धी कार्य :- जब देश पर कोई आपत्ति आती है तो आर्यसमाज के माध्यम से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा अपने दायित्त्वों का निर्वाह करने का कार्य करती है। चाहे सुनामी के समय कार्यकर्त्ता भेजने, या फिर आर्यसमाजों से राहत सामग्री एकत्र करके भेजने की बात हो, बिहार राज्य में आई भीषण बाढ़ हो या अन्य कोई दैवीय आपदा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा आर्यसमाजों के सहयोग से राहत कार्य करने लिए हमेशा तत्पर रहती है।

आर्यसमाज पर आई विपत्तियों के सम्बन्ध में जिम्मेदारी :- आर्यसमाज का संगठन बहुत विशाल हो गया है। यदा-कदा इस पर आपत्तियां आती रहती हैं। जैसे सरकार द्वारा आर्यसमाज मिण्टो रोड ध्वस्त करने पर सभा ने विरोध आन्दोलन को मजबूती से लड़ा। जब रानीबाग स्थित गुरु विरजानन्द मार्ग के नाम के स्थान पर नए नाम रखने की चेष्टा की तब सभा ने इसके विरोध में आन्दोलन किया तथा इसमें सफलता प्राप्त की। इसी प्रकार ऐसे अनेक अन्य अवसरों पर आपत्ति काल में सभा अपनी महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी को निभाती रही है।

सार्वदेशिक सभा से सम्बन्धित कार्यक्रम:- चूंकि दिल्ली देश की राजधानी है, इसलिए सार्वदेशिक सभा के अधिकतर कार्य, बैठकें, उत्सव दिल्ली में होते हैं। उन सभी उत्सव सम्बन्धी व्यवस्थाओं को तथा साधनों की उपलब्धता को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा हमेशा तत्पर रहती है।

सभा के जो कार्य महत्त्वपूर्ण श्रेणी में आते हैं, केवल उनका वर्णन यहां करने का प्रयत्न किया गया है। इन सब कार्यों के अतिरिक्त अनेक कार्य हैं जिनको सभा द्वारा सम्पादित किया जाता है। इन सब कार्यों के लिए आधुनिक रूप से सुसज्जित कार्यालय की, वाहनों की, प्रशिक्षित कर्मचारियों की आवश्यकता रहती है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का यह सौभाग्य है कि वर्तमान में सभा कार्यालय हर प्रकार के आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित है तथा सभा अधिकरियों की पूरी टीम मिलकर पूर्ण मेहनत के साथ सभा प्रधान जी के नेतृत्त्व में कार्य करने में जुटी हुई है।

प्रतिष्ठा में,

आने वाले समय में लागू करने के लिए विचार की गई योजनाओं एवं कार्यक्रमों पर दृष्टि रखते हुए लेख अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा। - सम्पादक

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टेलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह